३१
२५

३१
२५

३१
२५

१४

त्रिसूक्तं

पुरुषसूक्तम्, श्रीसूक्तम्, लक्ष्मीसूक्तं च

भाषा टीका सहितम्

अनेक जटिल एवं
सन्दिग्ध विषयों के निर्णय समेत



संपादक तथा भाषा-टीकाकार
श्रीद्वारकेश संस्कृत विद्यालयाऽध्यापक
आचार्य परमानन्द शास्त्री मिश्र त्रिगुणायक

प्रकाशक
गोवर्द्धन पुस्तकालय,
मथुरा।

मूल्य ।=)

* श्री जगदीश-आरती *

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभु जय जगदीश हरे ॥
भक्त जनों के संकट, क्षण में दूर करे ॥ ॐ ॥
जो ध्यावे फल पावे, दुख विनसे मनका ॥ प्र० ॥
सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तनका ॥ ॐ ॥
मात पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ॥ प्र० ॥
तुम विन और दूजा, आश करूं जिसकी ॥ ॐ ॥
तुम पूरण परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ॥ प्र० ॥
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता ॥ प्र० ॥
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥ ॐ ॥
तुम हो एक अगोचर, सब के प्राणपति ॥ प्र० ॥
किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति ॥ ॐ ॥
दीनबन्धु दुख हर्ता, तुम स्वामी मेरे ॥ प्र० ॥
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ॥ प्र० ॥
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, सन्तन की सेवा ॥ ॐ ॥



प्राक्कथन

वैदिक या याज्ञिक अथवा कर्मकाण्डी वही हो सकता है जिसने कि पूर्व में व्याकरण की शिक्षा प्राप्त करली हो। केवल मन्त्रों के उच्चैः स्वर से बोल लेने से या कण्ठ कर लेने से ही वैदिकता प्राप्त नहीं हो सकती। इसीलिये अपनी 'ऋग्वेदभाष्योपक्रमणिका में' सायणाचार्य लिखते हैं कि—'रक्षार्थं वेदानामध्येयं व्याकरणम्, 'ऊहःखल्वपि' न सर्वैर्लिङ्गैर्न च सर्वाभिर्विभक्तिभिर्वेदे मन्त्रा निगदिताः। ते चावश्यं यज्ञाङ्गत्वेन यथायथं विपरिणमयितव्याः। तान् नाऽवैयाकरणः शक्नोति विपरिणमयितुम्। तस्माद्ध्येयं व्याकरणम् आदि २। तथा—'स्थाणुरयंभारहारः किलाऽभूदधीत्य वेदं न विजानाति योऽर्थम्। योऽर्थज्ञ इत्सकलं भद्रमश्नुते नाकमेति ज्ञानविधूतपाप्मा" (नि. १।६) ज्ञातव्यः सर्ववेदार्थो वेदानां कर्मसिद्धये। पाठमात्रमधीती च पंकेगौरिव सीदति॥ मन्त्रो हीनः स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह। स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रुः स्वरतोऽपराधात्॥(पा.शि.५२) यस्तुप्रयुङ्क्ते कुशलोविशेषेशब्दान् यथावद् व्यवहारकाले। सोऽनन्तमाप्नोतिजयं परत्र वाग्योगविद् दुष्यतिचापशब्दैः" (ऋ० भा० उ०) के प्रमाणानुसार व्याकरणशून्य केवल 'घुक्कूदास' स्वयं तो दोष के भागी होते ही हैं किन्तु साथ में यजमान का और अनिष्ट करते हैं अतः आचार्य में इतनी योग्यता तो अवश्य ही होनी चाहिये कि जिससे ऊह कर सके और शुद्धि अशुद्धि जानता हुआ शुद्ध मन्त्रोच्चारणकर सके, मन्त्रार्थ की बात तो दूर रहा।

—आचार्य परमानन्द शास्त्री मिश्र।

अथ पूर्वं पुरुषसूक्तम्

तत्र मत्कृतं मङ्गलाचरणम्

समस्तवैष्णवाचार्यप्राप्तमुख्यासनानहम् ।
वन्दे शेषाऽवताराञ् श्रीरामानुजजगद्गुरून् ॥१॥

न्यास-विधानम्

हस्तयोः पादयोर्जान्वोः कट्योर्नाभौ हृदि क्रमात् ।
कण्ठे बाह्वोर्मुखे नेत्रे मूर्ध्नि वामाङ्गतो न्यसेत् ॥१॥

(न्यास-विधि)

न्यास की विधि यह है कि—पहिले वामहाथमें फिर दक्षिणहाथमें इसी तरह पहिले बायेंपैरमें फिर दक्षिणपैरमें इस तरह बायें अङ्ग से करे, यथा—सहस्रशीर्षा—से वामकरमें । पुरुषऽएवेदꣳ—से दक्षिणहाथमें । एतावानस्य—से बायें पैर में । त्रिपादूर्ध्व—से दक्षिण पैर में । ततो ब्विराडजायत—से वामजानु-में । तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतःसम्भृतं-से दक्षिणजानुमें । तस्माद्यज्ञात्सर्व-हुतऋचः—से वामकटि में । तस्मादश्वाः—से दक्षिणकटि में । तं यज्ञं बर्हिषि—से नाभि-मध्य में । यत्पुरुषं—से हृदय में । ब्राह्मणो-ऽस्य—से कण्ठदेश में । चन्द्रमा मनसो जातः—से वामबाहु में । नाभ्याऽआसीत्—से दक्षिणबाहुमें । यत्पुरुषेण हविषा-से मुख में । सप्तास्यासन्-से दोनों नेत्रों में । यज्ञेन यज्ञं—से मस्तकपर ।

इसी प्रकार सब न्यास शालग्राम आदि देवमूर्ति पर भी करे। 'यथात्मनि तथा देवे' इति वचनात्।

(न्यासपक्षनिर्णय)

यह न्यासविधि–ऋग्विधान के अनुसार है। शौनकोक्त-विधान में कुछ इससे अन्तर पड़ता है, यह सब ऋग्विधान, शोनकोक्तविधान, श्रीमद्भागवतोक्तविधान आदि के पूजा प्रकार षोडशशताब्दी में होने वाले ओड़छा नरेश श्रीवीरसिंह के परम-पूज्य सान्नाढ्यकुलभूषण महामहोपाध्याय श्रीमित्रामिश्रकृत लक्षद्वयश्लोकात्मक धर्मशास्त्रशिरोमणि वीरमित्रोदयनामक महानिबन्ध में विस्तार के सहित दिये गये हैं। जहाँ कई पक्ष हों वहाँ एक पक्ष से लक्ष्य सिद्धि कर लेनी चाहिये,क्योंकि शास्त्र-का यह नियम है कि- "सिद्धान्तितपक्षद्वयमध्ये एकतरपक्षेण लक्ष्यसिद्धौ पक्षान्तरेण दोषदानस्य क्षाप्यस्वीकारात्" यह न्याय सर्वशास्त्रसंमानित है।

अथ प्रयोगः

प्रातरुत्थाय हरिं स्मृत्वा कृतावश्यकक्रियो दन्त-धावनपूर्वकं स्नात्वा विहितसन्ध्यावन्दनादिक्रियः प्रागग्रदर्भासनमध्यास्य,प्रागास्य उदङ्मुखो वा स्थिर-प्रतिमासंमुखो वा 'अपवित्र इत्यादिनाऽत्मानं संभृत-संभारं च संप्रोक्ष्याचम्य प्राणानायम्य गुरून् स्मृत्वा संकल्पं कुर्यात्।

प्रातःकाल उठकर प्रातः स्मरणीय स्तोत्रों का पाठ करके आवश्यक दैनिक शौचादि क्रियाओं से निवृत्त होकर दन्तधावन पूर्वक स्नान करके सन्ध्यावन्दनादि नित्यकर्म करके 'अपवित्रः पवित्रो वा' मन्त्र से अपने शरीर तथा पूजासामग्री पर जलछिड़क कर तीनवार आचमन करके गुरु का ध्यान करके नीचे लिखा संकल्प करे—

संकल्पः

देशकालाद्युच्चार्यअमुकगोत्रोऽमुकराशिरमुकशर्मा (वर्मा, गुप्तो) ऽहं श्रुतिस्मृतिपुराणोक्तफलप्राप्त्यर्थं श्रीमद्भगवत्प्रीत्यै श्रीमद्भगवतो विष्णोः पूजनमहं-करिष्ये। तत्रादौ पूजनांगत्वेन पुरुषसूक्तेन षोडशां-गन्यासानहं करिष्ये।

इस तरह पृथक् २ संकल्प बोल कर संकल्प का जल पात्र में छोड़दे।

विनियोगः

सहस्रशीर्षेतिषोडशर्चस्य पुरुषसूक्तस्य नारायण-ऋषिः, जगद्बीजं, पुरुषोदेवता, आद्यानां पञ्चदशा-नामृचामनुष्टुप्छन्दः,अन्त्यायास्त्रिष्टुप्छन्दः सर्वासां न्यासे विनियोगः।

इस तरह बोल कर विनियोग के जल को ताम्रपात्र में छोड़दे। फिर नीचे लिखे श्लोकों से ध्यान करे—

ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरिजासनसंनिविष्टः। केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटीहारी हिरण्मयवपुर्धृतशंखचक्रः॥१॥ सशंखचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्। सहारवक्षःस्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम् ॥२॥

(ध्यान निर्णय)

(यह ध्यान–मनसा चिन्तन है, ध्यै चिन्तायाम्, शालग्राम शिलादिके पूजनपक्ष में यह ध्यान करे) हस्तपादादिसंयुक्त स्वलंकृत शैली तथा धातुमयी आदि प्रतिष्ठित चलाचल प्रतिमाओं का तो साक्षात् दर्शन करना ही ध्यान है क्योंकि शैली आदि अर्चाओं में अर्चारूप से तत्तत्प्रतिष्ठाकाल में तत्तद्देवता का अवतरण हो ही चुका है अतः उनमें तो "परो वा व्यूहो वा विभव उतवार्चाऽवतरणः" से अर्चावतारत्व सिद्ध ही है।

षोडशोपचाराः

आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाचमनीयकम्।
स्नानं वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यादिभिः क्रमात्॥१॥
धूपं दीपं च नैवेद्यं नमस्कारं प्रदक्षिणाम्।
उद्वासनं षोडशकमेवं देवार्चने विधिः (नागदेवः)

(आवाहनविसर्जननिर्णय)

यद्यपि–उद्वासावाहने न स्तः स्थिरायामुद्धवार्चने,

अस्थिरायां विकल्पः स्यात् स्थण्डिले तदुद्वयं भवेत्–

इस श्रीभागवतोक्त प्रमाण से तथा "प्रतिमास्थानेऽप्यप्स्ववग्ना-वावाहनविसर्जनवर्जं सर्वं समानम्' इस बौधायनोक्त वचन से शालग्रामशिला, जल, अग्नि तथा शैली, दारुमयी, धातुमयी आदि प्रतिमाओं में आवाहन विसर्जन वर्जित हैं। किन्तु विसर्जन को छोड़ कर आवाहन करना तो भगवान् को अपने सर्वथा सम्मुखता प्राप्ति के लिये उचित ही है। जैसा कि प्रमाण है–

आवाहनऋचा दद्यात्पूर्वं पुष्पांजलिं हरेः।
तस्यैवोन्मुखताप्राप्त्यैयागे चोद्वासने ऋचा ॥इति॥

यागे पूजायां, उद्वासने ऋचा उद्वासनविहितया ऋचा पूजांते पुष्पांजलिं दद्यात् इत्यर्थः, । इति वीरमित्रोदये म-म- साम्राढ्य-श्रीमित्रमिश्राः, तथा–व. कृ. दीपके, म. म. श्रीनित्यानन्दपन्ताः। उद्वासन के लिये यह है कि—

उद्वासयेच्चेदुद्वास्यं ज्योतिर्ज्योतिषि वापुनः,–यद्यु-द्वासयेत्तर्हि प्रतिमायां यन्न्यस्तं ज्योतिस्तत्पुनरपि हृत्पद्मस्थे ज्योतिष्येवोद्वासनीयम्।

इति वीरमित्रोदये निर्णीतत्वात्। 'चल या स्थण्डिल (सैकती) आदि प्रतिमा की ज्योति का उद्वासन अपने हृदय-कमल की ज्योति में ही कर लेना चाहिये।

पुरुषसूक्तम्

(षोडशोपचार–निर्णय)–

उपचार १६ सोलह हैं। अवशिष्ट सब उपचार इन्हीं सालहों के अन्तर्गत हैं—

आवाहनासनपाद्यार्घाचमनीयस्नानाचमनवस्त्रयुगलाचमनोपवीताचमनगन्धपुष्पधूपदीपोपहाराचामनमुखवासस्तोत्रप्रणामदक्षिणाप्रदक्षिणाऽरार्तिकमंत्रन्त्रपुष्पांजलिक्षमाप्रार्थनान्तानि।

अर्घ्य के बाद जो आचमनीय उपचार है वह आचमनीय तो पृथक् उपचार ही है इसके अतिरिक्त अन्य सब आचमन उन २ उपचारों के अङ्गभूत हैं। प्रणाम और प्रदक्षिणा स्तोत्र के ही अङ्गभूत हैं अथवा स्तोत्र, प्रदक्षिणा आरार्तिक तथा मंत्र पुष्पांजलि, क्षमाप्रार्थना–ये सब प्रणाम (नमस्कार) के अङ्ग हैं। (वीरमित्रोदय) उपचारों के विषय में भी कई पक्ष प्रचलित हैं।

'तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं' मंत्र से ही स्नान, पञ्चामृत-स्नान, गन्धजलस्नान, विशेषस्नान–आदि करा देने चाहियें। पञ्चामृत स्नान, 'पयः पृथिव्याम्' आदि तत्तन्मन्त्रों से भी करा देने चाहियें (वी० मि०)

दीपक दो होते हैं–एक तो उपचारदीपक तथा एक कर्मादि में तमः संचारिभूतादिनिवारक(रक्षार्थ)अखण्ड या सखंड रक्षादीपक।

इन सब विषयों पर विस्तृतविवेचन कर्मकाण्ड विषयक

एक निजनिर्मितग्रन्थ में करने की इच्छा है। इस सब की पूर्ति होना भगवदनुग्रह पर ही निर्भर है।

सांग सुविभूषित मूर्ति के पक्ष में विष्णु का ध्यान इस तरह करे यथा—

शंखचक्रगदापद्मपाणिं सजलजलदसुन्दरं संवीतपीताम्बरं, कमलदललितलोचनं, लसत्किरीटकुंडलकेयूरकंकणं, रत्नखचितक्षुद्रमुद्रान्वितकराङ्गुलीकंकटितटविलसद्रत्नमेखलं श्रीभगवन्तं ध्यायामि।

अथ सरलता के लिये पुरुषसूक्त के प्रतिमंत्रान्त में अङ्गन्यास लिखते हुए उपचार भी लिखे देते हैं—

अथ न्यासोपचार सहितं

❁ माध्यन्दिनीयपुरुषसूक्तम् ❁

हरिः ओ३म्—सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमिꣳ सर्वतःस्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाँगुलम् ॥ १ ॥ इति वामकरे, आवाहनं सम०। पुरुषऽएवेदꣳ सर्वंयद्भूतंयच्चभाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥ इति दक्षिणकरे, आसनं स०। एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोस्यविश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि ।३। इतिवाम-

पादे, पाद्यं । त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोऽस्येहाभव-
त्पुनः । ततोव्विष्वङ्व्यक्कामत्साशनानशनेऽअभि
॥ ४ ॥ दक्षिणपादे,अर्घ्यं सम० । ततोव्विराडजाय-
तव्विराजोऽअधि पूरुषः । सजातोऽअत्यरिच्यत प-
श्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ५ ॥ वामजानौ, आचम-
नीयं । तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतःसम्भृतंपृषदाज्ज्यम् । पशूँ-
स्ताँश्चक्रेव्वायव्यानारण्याग्राम्याश्चये ॥ ६ ॥
दक्षिणजानौ,स्नानम्, आचमनीयंस० । तस्माद्य-
ज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचःसामानि जज्ञिरे । छन्दाᳬसि जज्-
ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥ ७ ॥ वामकट्यां,
वस्त्रयुग्ममाचमनीयंस० । तस्मादश्वाऽअजायन्त-
येकेचोभयादतः । गावो ह जज्ञिरेतस्मात्तस्मा-
ज्जाताऽअजावयः ॥ ८ ॥ दक्षिणकट्यां, यज्ञो-
पवीतमाचमनम् । तंयज्ञंबर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जात-
मग्रतः । तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये
॥९॥ नाभौ, चन्दनं सम० । यत्पुरुषंव्यदधुःकतिधा-
व्व्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किंबाहूकिमूरूपा-
दाऽउच्येते ॥१०॥ हृदये, पुष्पाणि स० । ब्राह्मणो-

ऽस्स्यमुखमासीद्‌वाहूराजन्न्यः कृतः। ऊरूतदस्ययद्वै-
श्यःपद्‌भ्यार्ठ० शूद्रोऽजायत ॥ ११ ॥ कण्ठे, धूपं
स०। चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोःसूर्य्योअजायत।
श्रोत्राद्‌वायुश्चप्राणश्चमुखादग्निरजायत ॥ १२॥
वामवाहौ, दीपं सम०। नाभ्याऽआसीदन्तरिक्षर्ठ०
शीर्ष्णोद्यौःसमवर्त्तत। पद्‌भ्याम्भूमिर्द्दिशःश्रोत्रात्त-
थालोकाँ२ऽअकल्पयन् ॥१३॥ दक्षिणवाहौ, नैवेद्यं।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्न्वत। वसन्तोऽस्यासी-
दाज्ज्यङ्ग्रीष्ममऽइध्मःशरद्धविः ॥१४॥ मुखे, नम-
स्कारं सम०। सप्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः
कृताः। देवा यद्यज्ञन्त न्न्वानाऽअवध्नन्न्पुरुषंपशुम्
॥१५॥ अक्ष्णोः दक्षिणां प्रदक्षिणां च सम०। यज्ञेन-
यज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्रथमान्न्यासन्।
तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति
देवाः ॥१६॥ शिरसि, मंत्र पु० प्रदक्षिणां च ततः
पूजान्ते क्षमाप्रार्थनां कुर्यात्, यस्म स्मृत्येत्यादिपद्यैः।

इति न्यासपूजासहितं श्रीपुरुषसूक्तम् आचार्य-
परमानन्दशास्त्रिमिश्रत्रिगुणायकसंगृहीतं समाप्तम्।

"यदि स्थिरप्रतिमा (मूर्ति) का मुख उत्तर को हो तो पूजन के समय पूजक किधर को मुख करे"—इसका निर्णय

प्रतिमाः प्राङ्मुखीरुदङ्मुखो यजेतान्यत्रप्राङ्मुखः (गृ०प०) अत्र श्रीमित्रमिश्रा वीरमित्रोदये—अत्र प्रतिमाः प्राङ्-मुखीरुदङ् मुखो यजेतेति यदुक्तं तत्स्थिरप्रतिमाविषयम् तथा तत्र दर्शनात्, अन्यत्रेति चलप्रतिमाविषयम्। अथवा 'देवस्य मुखमारम्य दिशं प्राचीं प्रकल्पयेत्तदादिपरिवाराणामंगा-वरणसंस्थितिः ॥१॥ (शौ० वि० पू० प्रकारोद्धृतं वीरमित्रोद-यीयं वचनम्)

आसीनः प्रागुदग्वार्चेदर्चायां त्वथ संमुखः (श्री०भा०)
पूज्यपूजकयोर्मध्ये दिशं प्राचीं प्रकल्पयेत्।
प्राच्येव प्राची सोद्दिष्टा मुक्त्वा वै देवपूजनम्

इस सबका निष्कर्ष यह है कि–स्थिरप्रतिमा के पूजन में पूजक को देवता के संमुख ही अपना मुख करके पूजन के लिये बैठना चाहिये, उसमें यह विचार न करे कि देवता का मुख उत्तर को है तो मेरा मुख दक्षिण को हो जायगा क्योंकि वहां तो 'पूज्यपूजकयोर्मध्ये प्राची' तथा–देवस्य मुखमारभ्य(वी०मि०) के प्रमाण से पूजक के सामने पूर्व ही है। यह सर्वसंमत एक पक्ष है। दूसरा पक्ष यह है कि स्थिरप्रतिमा का मुख यदि पूर्व की तरफ है तो पूजक को उत्तराभिमुख होकर पूजन करना

चाहिये जैसा कि ऊपर (गृ० प०) के वाक्य में स्पष्ट है इस पद्य में पूजक के पश्चिमाभिमुख होने की शंका भी नहीं रहती और यदि देवता का मुख दक्षिण की तरफ है तो पूजक को उदङ्मुख होकर बैठना 'उदङ्मुखः प्राङ्मुखो वा दैवं कर्म समारमेत्' के प्रमाण से प्रमाणित है ही। देवता के पश्चिमाभिमुखत्व में तो पूजक का पूर्वको मुख होना युक्त ही है। इस पद्य में उत्तराभिमुखदेवमूर्ति के होने पर पूजक को पूर्वाभिमुख होकर बैठने की "एकत्र निर्णीतः शास्त्रार्थोऽन्यत्राऽपि प्रयुज्यते" न्यायसे 'उत्तराभिमुखीः प्रतिमाः प्राङ्मुखो यजेत' विधि तो स्वतः प्राप्त हो जाती है। इससे पूजक को दक्षिणाभिमुख होने की शंका भी नहीं रहती। चलप्रतिमाके विषयमें निर्णय स्पष्ट ही है। किन्तु इसमें "देवस्य मुखमारभ्य दिशं प्राचीं प्रकल्पयेत्" आदि के अनुसार ही प्राची दिशा की कल्पना करके तदादि मानकर ही देवपूजन तथा अंगपूजा एवं आवरण पूजा करनी चाहिये।

आवरणसहित देवपूजा यदि करनी हो तो 'कृत्वाऽवरणपूजांतु धूपदीपौ निवेदयेत् (पु० अ०) के अनुसार ही उपचार समर्पण करे। आवरणादिपूजा विस्तार भयके कारण यहाँ नहीं दे रहे हैं, किसी स्वतन्त्र स्वनिर्मितग्रन्थ में विस्तार से यह सब देने की इच्छा है

मुद्राओं के विषय में निर्णय

मुद्राओं का लक्षण हम यहां अनावश्यक होने के कारण नहीं लिख रहे हैं। क्योंकि गृह्यपरिशिष्टके प्रमाणानुसार धर्मसिन्धु-

कारमें मुद्राविधि को तान्त्रिक मानते हुए अवैदिकता के कारण अनावश्यक माना है (ध०सिं०तृ०प०सं०प्र०व०) ।

प्रयोग

शौचादिनित्यक्रियाओं से निवृत्त होकर स्नान कर शुद्ध-वस्त्रयुगल धारण कर शुद्धस्थान पर शुभासनपर पूर्वाभिमुख होकर (स्थिर प्रतिमा के संमुख बैठकर) अपवित्रः पवित्रो वा' आदि से अपने शरीरपर तथा संभृतसंभार पर जल छिड़ककर, तीन वार आचमनकर प्राणायाम कर गुरु गणेशजी को नमस्कार कर सूर्य भगवान् को प्रणाम कर संकल्प करे—

❀ अथ श्रीसूक्तम् ❀

क्षीरोदार्णवसम्भूते, कमले कमलालये ।
धनं प्रयच्छ शोभाढ्ये ! त्वां विनास्ति न मे गतिः

अर्थ—हे क्षीरसमुद्र से उत्पन्न होने वाली ! हे कमले ! कमलवासिनि ! हे शोभाशालिनि ! आप मुझे धन दो, क्योंकि तुम्हारे बिना मुझे कोई सुख प्राप्त नहीं हो रहा है। अतएव सुख प्रदानार्थ हे लक्ष्मि ? आप मेरे गृह में वास करो।

❀ श्रीसूक्तानुसार ❀
ध्यान, एवं पूजनविधान

संकल्पः- देशकालौ संकीर्त्य अहं श्रीमहालक्ष्मीप्रीतये श्रीसूक्तस्य पाठं करिष्ये' इसतरह संकल्प करके भगवती श्रीमहालक्ष्मीजी का ध्यान नीचे के श्लोक से करे जैसेः—

या सा पद्मासनस्था विपुलकटितटी पद्मपत्रायताक्षी
गम्भीरावर्तनाभिः स्तनभरनमिताँ शुभ्रवस्त्रोत्तरीया ।
लक्ष्मीर्दिव्यैर्गजेन्द्रैर्मणिगणखचितैः स्नापिता हेम-
कुम्भै–र्नित्यं सा पद्महस्ता मम वसतु गृहे सर्वमा-
ङ्गल्ययुक्ता ॥ १ ॥

श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं के 'इन्दिरा' आनन्द, कर्दम, और चिक्लीत ऋषि हैं। 'इन्दिरा' ॐ हिरण्यवर्णां मन्त्र की ऋषि हैं । तथा आनन्द, कर्दम और चिक्लीत ये तीनों शेष चौदह ऋचाओं के ऋषि हैं । ये तीनों इन्दिरा (लक्ष्मी) के पुत्र हैं ।

विनियोगः–

ॐ हिरण्यवर्णा मिति पंचदशर्चस्य श्रीसूक्तस्य श्री आनन्दकर्दमचिक्लीतेन्दिरासुता महर्षयः । श्रीरग्निर्देवता,आद्यास्तिस्त्रोऽनुष्टुभः,चतुर्थी बृहती, पञ्चमीषष्ठ्यौ त्रिष्टुभौ,ततोऽष्टावनुष्टुभः । अन्त्या प्रस्तारपंक्तिः । हिरण्यवर्णामिति बीजम्, तांम आवह जातवेद इति शक्तिः । कीर्तिमृद्धिं ददातु म इति कीलकम्, मम श्रीमहालक्ष्मीप्रसादसिद्ध्यर्थे न्यासे जपे (पाठे) च विनियोगः ।

इस विनियोग को बोलकर हाथ के जल को ताम्रपात्र में छोड़ दे, फिर 'ॐ श्रीमिति बीजाभ्यां जलेन त्रिवारं कर-शुद्धिं कुर्यात्' । ॐ श्रीं इन दो बीजों से तीन बार जल से हाथ धो डाले ।

मूर्धाक्षिकर्णनासामुखगलदोर्हृदयनाभिगुह्येषु ।
पायूरुजानुजंघाचरणेषु न्यसेदृचः क्रमेण ॥

पूर्वमङ्गन्यासः (पृ० भा०)

हिरण्यवर्णामिति शिरसि। ओं तांमआवह जात वेद इति नेत्रयोः । अश्वपूर्वामिति कर्णयोः । कांसो-स्मितामिति नासिकायाम् । चन्द्रां प्रभासामिति मुखे । आदित्यवर्णामिति कण्ठे । उपैतु मामिति बाह्वोः । क्षुत्पिपासामिति हृदये । गन्धद्वारामिति नाभौ । मनसः काममिति गुह्ये । कर्दमेनेति पायौ (गुदे) । आपः स्रजन्त्वित्यूर्वोः । आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिमिति जान्वोः । आर्द्रां यस्करिणीमिति जंघयोः । तांम आवह जातवेद इति पादयोः ।

अथ करन्यासः (पृ०भा०)

ॐ नमो भगवत्यै महालक्ष्म्यै इति विशेषणं प्रति-न्यासं योजनीयम् । ॐ हिरण्यवर्णायै अंगुष्ठाभ्यां

नमः । ॐ हरिण्यै तर्जनीभ्यां नमः । ॐ सुवर्ण-रजतस्रजायै मध्यमाभ्यां नमः । ॐ चन्द्रायै अना-मिकाभ्यां नमः । ॐ हिरण्मय्यै कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ लक्ष्म्यै करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादि षडंगन्यासः—(पृ० भा०)

ॐ हिरण्यवर्णायै हृदयायनमः । ॐ हरिण्यै शिरसे स्वाहा । ॐ सुवर्णरजतस्रजायै शिखायै-वषट् । ॐ चन्द्रायै कवचाय हुम् । ॐ हिरण्मय्यै नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ लक्ष्म्यै अस्त्राय फट् । ("वक्षः शिरः शिखा बाहू नेत्रमस्त्राय फट् इति" क्रमः)

फिर 'भूर्भुवः स्वरोम्, यह बोलकर चुटकी से सब दिशाओं में दिग्बन्ध करे ।

हिरण्मय्यै नमः हृदयाय नमः, ॐ चन्द्रायै नमः शिरसे स्वाहा, ॐ रजतस्रजायै नमः शिखायैवषट्, ॐ हिरण्यस्रजायै नमः कवचाय हुम्, ॐ हिरण्यायै नमः नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ हिरण्यवर्णायै नमः अस्त्राय फट्, इत्यपि कुत्रचित् ।

इस तरह क्रम से न्यास करे । पुनः ध्यान करे ।

अरुणकमलसंस्था, तद्रजः पुंजवर्णा,

करकमलधृतेष्टाभीतियुग्माम्बुजाता ।
मणिमुकुटविचित्राऽऽलंकृताऽऽकल्पजालैः,
सकलभुवनमाता संततं श्रीः श्रियै नः ॥

अथ सोपचारं पूजनम्

'हिरण्यवर्णा०' से आवाहनम् ॥ १ ॥
तां म आवह०' से आसनम् ॥ २ ॥
'अश्वपूर्वां०' से पाद्यम्० ॥ ३ ॥
'कांसोस्मितां' से अर्घम्० ॥ ४ ॥
'चन्द्रां प्रभासां' से आचमनं पंचामृतम्० ॥ ५ ॥
'आदित्यवर्णे०' से शुद्धजलेन गंगोदकेन वा स्नानम् ॥ ६ ॥
इसके पश्चात् पञ्चोपचार से पूजन करे पुनः अभिषेक करे ।
'उपैतु मां०' से वस्त्रयुगलम्० आच० ॥ ७ ॥
'क्षुत् पिपासां०'से यज्ञोपवीतम् आच० सम० ॥८॥
'गन्धद्वारां'० से चन्दनम्० ॥ ९ ॥
'मनसः कामं०' पुष्पाणि स० ॥ १० ॥
'कर्दमेन०' से धूपम्० ॥ ११ ॥

'आपःसृजन्तु०' से दीपम्० ॥ १२ ॥
आर्द्रांपुष्करिणीं०' से नैवेद्यं स० ॥ १३ ॥
'आर्द्रांयस्करिणीं' से फलं ताम्बूलं च ॥ १४ ॥
'तामऽआवह०' से दक्षिणां' नीराजनं, मन्त्र-पुष्पाञ्जलिं च ॥ १५ ॥
'यः शुचिः०' से नमस्कारम् ॥ १६ ॥

इसके पश्चात्—यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् । कहे और ॐ विष्णवे नमः ३ तीन वार कहे ।

(अथ श्रीसूक्तका ससंपुटपुरश्चरणविधान)

श्रीसूक्त के पुरश्चरणमें 'ओ३म् श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद २ श्रींह्रीं श्रीं ओ३म् महालक्ष्म्यै नमः ।'

इस मन्त्र को सम्पुट में आदि और अन्त में कहे और जिस मन्त्र का सम्पुट करना हो उसके दो चरण आदि में और दो चरण अन्त में कहे,—ऐसा ही रुद्रयामल में विधान है ।

यथा—दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः ।
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।

दारिद्र्यदुःखभयहारिणि कात्वदन्या ।
सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता'' ॥

इस मन्त्र का सम्पुट लगा कर पुरश्चरण करना है तो निम्न प्रकार से होगा—

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद २ श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः ।
ॐ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोममावह ।
दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्रचित्ता ॥

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महा लक्ष्म्यै नमः ॥

इस प्रकार का विधान है ।

इति श्रीसूक्तस्य न्यासध्यानपूजनादिकम् आचार्य परमानन्द-शास्त्रिमिश्रत्रिगुणायकेन संगृहीतं संपूर्णम् ।

❋ अथ श्रीसूक्तस्य ❋

श्रीविद्यारण्यकृतभाष्यानुसारी–

❋ सरलहिन्दीभाषार्थः ❋

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

हे जातवेदः(हे अग्ने !) तुम स्वर्ण के समान कान्तिवाली तथा कुछ हरितवर्ण वाली, कोई कोई हरिणी का मृगी भी अर्थ करते हैं, जैसा कि पुराण में लिखा है कि–'श्रीर्ध्द त्वाहरिणीरूपमरण्ये सञ्चचार ह" अर्थात् लक्ष्मी जी ने हरिणी रूप धारण कर वन में भ्रमण किया था, तथा सोने एवं चाँदी के पुष्पों की माला धारण करने वाली,चन्द्रमा की भाँतिप्रकाश युक्त, हिरण्य के से रूप वाली लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ ॥ १ ॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥ २ ॥

हे जातवेद (अग्निदेव) तुम उस लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ जिसके कि आने पर मैं स्वर्ण, गौ, अश्व (घोड़े) एवं पुत्र पौत्रादि नौकर चाकर प्राप्त कर सकूं और वह अनपगामिनी अर्थात् मुझे कभी न छोड़े वह मेरे घर में स्थिर होकर रहे ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम् ॥

मैं ऐसी लक्ष्मी देवी का अपने पास आने के लिये आवाहन करता हूँ जिसके कि आगे घोड़े चलते रहें तथा रथ जिसके मध्य में हों एवं सुन्दर हाथियों के नादों को जतलाने वाली हो ऐसी वह आश्रय करने योग्य सेनारूप आवाहित की हुई लक्ष्मीदेवी मुझ पर प्रसन्न हो।

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मे स्थितां पद्मवर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ४ ॥

जो वाणी और मनके अगोचर या ब्रह्मरूप है तथा मंद २ हास्य करने वाली एवं स्वर्ण के आकार वाली, दयार्द्र हृदय वाली, प्रशस्त प्रकाशवाली और जो स्वयं तृप्त है तथा समस्त मनोरथों से भक्तों को तृप्त कर देने वाली है ऐसी विश्व विख्यात पद्म (कमल) में वास करने वाली एवं कमल सदृश वर्ण वाली लक्ष्मी का मैं यहाँ आवाहन करता हूं अपने घर बुलाता हूँ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्। तां पद्मिनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥ ५ ॥

मैं चन्द्रमा के समान प्रकाश करने वाली, प्रकृष्टकांतिवाली, कीर्तिसे प्रकाशमान, स्वर्ग में देवताओं से भी सेवित, अत्यन्त उदार हृदय वाली, कमल के से आकार वाली लक्ष्मी की इस लोक में शरण प्राप्त करता हूं जिससे कि मेरी दरिद्रता दूर हो अतः तुझ लक्ष्मी का मैं वरण करता हूं ॥ ५ ॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षो-ऽथ विल्वः। तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरा याश्च वाह्या अलक्ष्मीः ॥ ६ ॥

हे सूर्य के समान कान्तिवाली, ! तुम्हारे तप से वनस्पति विल्ववृक्ष की उत्पत्ति हुई है अतएव उस विल्ववृक्ष के फल तुम्हारी कृपा से मेरे आंतरिक अज्ञान और उसके कार्य एवं वाहिरी अलक्ष्मी [दरिद्रता] को नष्ट करें ॥ ६ ॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिं मृद्धिं ददातु मे ॥७॥

हे लक्ष्मिमातः, ! महादेव जी के सखा कुवेर तथा कीर्ति दक्षप्रजापति की कन्या (कीर्त्यभिमानिनी देवता) ये दोनों मुझे मणिभद्र (कोशाध्यक्ष) (मणि चिंतामणि) के साथ प्राप्त हों अर्थात् मुझे धन और यश दोनों मिलें, क्योंकि मैं इसी राष्ट्र (भारतवर्ष) में उत्पन्न हुआ हूं अतएव मुझे वे कुवेर जी कीर्ति और ऋद्धि अवश्य प्रदान करें ॥ ७ ॥

क्षुत्पिपासामलांज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्। अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

हे मातः ! भूख और प्यास के कारण मलिनता को धारण करने वाली आपकी जेठी वहन अलक्ष्मी [दरिद्रता] का मैं नाश चाहता हूं अतएव हे देवि ! मेरे घर से असमृद्धि और अभूति [अनैश्वर्य] को शीघ्र दूर कर दो ॥ ८ ॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

जो गन्धलक्षण वाली अर्थात् पृथ्वीरूप (पृ० भा०) किसी के भी वश में न रहने वाली, नित्यपुष्ट (धनधान्यादि से समृद्ध) शुष्क गोमयवती अर्थात बहुत से घोड़े और गौ आदि पशुओं से भरी हुई, समस्त प्राणियों की ईश्वरी या आधार भूत ऐसी उस भगवती भूरूप लक्ष्मी को मैं आवाहित करता हूं अर्थात् अपने यहाँ घर में बुलाता हूं ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

हे लक्ष्मिदेवि ! मानसिक सङ्कल्प, वाणी की सत्यता, पशुओं गोमहिष्यादिकों के रूप (दुग्ध, दधि नवनीत) आदि की अधिकता को एवं अन्नादिकों यव व्रीहिधान, गोधूम चणक (आदि) के रूपों (भक्ष्य, भोज्य, चोष्य, लेह्य) को प्राप्त करूँ । श्री (लक्ष्मी) और यश (कीर्ति) मुझ में अर्थात् मेरे घर में वास करें, मैं धनवान् एवं कीर्तिमान् हो जाऊँ ॥ १० ॥

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

कर्दम नाम के ऋषि पुत्र से श्रीलक्ष्मी जी सन्तान वती हैं,

अतः हे कर्दम श्रीपुत्र ! तुम मेरे घर में अवश्य रहो । हे कर्दम ! तुम मेरे कुल में कमल की मालाओं को पहिने हुई अपनी माता लक्ष्मी को बसाओ ॥ ११ ॥

आपःसृजन्तु स्निग्धानिचिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले॥ १२ ॥

जल चिकने पदार्थों को या स्नेह युक्त कार्यों को उत्पन्न करे । हे चिक्लीत ! लक्ष्मी पुत्र ! आप मेरे घर में निवास करो तथा माता लक्ष्मी देवी को भी मेरे घर में बसाओ ॥ १२ ॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदोम आवह॥१३॥

हे अग्निदेव ! आर्द्र गन्ध वाली तथा अभिषेक के लिये उद्युक्त हाथियों के शुण्डाग्र भागों वाली या कमलों से युक्त या पद्मलतारूप पुष्टिस्वरूपवाली, पीतवर्ण वाली एवं कमलमाला-विभूपिता, चन्द्रमा के समान प्रकाश करने वाली, स्वर्णरूप लक्ष्मी को मेरे घर में आवाहन करो॥ १३ ॥

आर्द्रां यस्करिणीं यष्टिं, सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह।१४॥

हे जातवेद ! अग्ने ! दया से आर्द्र चित्त वाली या आर्द्र-गन्ध वाली तथा दुष्टों को दंड देने वाली यष्टि स्वरूपा [धर्म

दंडस्वरूपा] सुन्दर कान्ति वाली एवं सुवर्ण कमलों की माला धारण करने वाली, सूर्य की भाँति प्रकाशित होने वाली स्वर्ण के समान आभा वाली या सुवर्णरूप लक्ष्मी को मेरे घर में बुलाओ और बसाओ ॥ १४ ॥

तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

हे अग्निदेव ! मेरे घर में उस लक्ष्मी को बुलाओ जो अनपगामिनी हो अर्थात् मुझे कभी न छोड़े, जिस लक्ष्मी के आने पर मैं सोना, उत्तम यश और दास दासियों, घोड़े, नौकर-चाकर एवं पुत्रों तथा पौत्रों को भी प्राप्त करूँ अर्थात् ऐसी लक्ष्मी मेरे गृह में निरन्तर रूप से रहे ॥ १५ ॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्चदशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

जो मनुष्य लक्ष्मी की प्राप्ति की इच्छा रखता हो वह पवित्र और सावधान चित्त से प्रति दिन अग्नि में गो घृत से हवन करे और उसके साथ ही साथ लक्ष्मी सूक्त की पन्द्रहों ऋचाओं का जप करे ऐसा करने से अवश्य ही लक्ष्मी की प्राप्ति होती है ।

विशेषः—इस श्री सूक्त के अनुष्ठान में अग्नि देव को

सम्मुख प्रज्वलित करके श्रीसूक्त की १५ ऋचाओं से प्रत्येक के अन्त में 'स्वाहा' पद उच्चारण करके अग्नि में केवल घी का हवन करे तथा उस प्रज्वलित अग्नि के ही सम्मुख होकर अंजलि बांध कर पन्द्रहों ऋचाओं का निरन्तर पाठ करता रहे,इस तरह करने से शीघ्र फल प्राप्ति होती है। इस सूक्त की १५ आवृत्ति करके प्रति दिन हवन करने से शीघ्र ही फल प्राप्त होता है इसमें सन्देह नहीं।

ऐसे स्वल्प हवन के लिये लोहे का या नवीन मृन्मय चल कुण्ड भी प्रशस्त माना गया है। उसमें प्रति दिन हवन करता रहे। इसके लिए शास्त्रोक्त प्रमाण है।

स्वल्पो होमो वेदिकायां लोहपात्रेऽथवा भवेत्।
मृन्मये वा हस्तकृते कैश्चिदेवं समीरितं(कुं. कौ. ६६)
नैमित्तिके च नित्ये वेदीचाप्यायसं पात्रम्।
नूतनमृन्मयपात्रं कैश्चिदभिहितं प्रशस्तम् (कुं. त. प्र.)
एकमेखलकं वापि कुण्डं संक्षेपकर्मणि।
कुर्याद्वृत्तं स्थिरं वापि नहि कुंडं विना शुभं।
(कु० ना० पं० रा० ३०)

इत्याचार्यपरमानन्दशास्त्रिमिश्रकृतभाषाटीकाविभूषितं श्रीसूक्तं समाप्तम्।

❀ अथ हिन्दीभाषाभाष्यसमन्वितम् ❀

❀ श्रीलक्ष्मीसूक्तम् ❀

तत्रादौ–

❀ मत्कृतं मङ्गलाचरणम् ❀

वेदान्ताद्यनवद्यविद्यवुधसद्वृन्दप्रवन्द्यप्रधीवेदाचार्य–
चिरंजिलालविदुषः पुत्रेण नत्वा श्रियम्।
सन्नाढ्याधिगुणाढ्यमिश्रसुकुलोद्भूतेन संभूष्यते
लक्ष्मीसूक्तमिदं सुशास्त्रिपरमानन्देन सद्भाषया ॥१॥

विधान–

कृतनित्योचित क्रियोऽनुष्ठानकर्ता उदङ्मुखःप्राङ्मुखो वा उपविश्य 'अपवित्रःपवित्रो वा सर्वाऽवस्थाङ्गतोऽपिवा। यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स वाह्याऽभ्यन्तरः शुचिः। इति मन्त्रेणात्मानं पूजासामग्रीं च संप्रोक्ष्य वारत्रयमाचम्य निर्विघ्नकार्यसिद्ध्यर्थं गणेशादीन् संस्तुत्य सङ्कल्पयेत्।

नित्यनैमित्तिक कार्यों से निवृत्त होकर अनुष्ठान कर्ता उत्तराभिमुख या पूर्वाभिमुख हो "अपवित्रः पवित्रो वा" इस मन्त्र से अपने ऊपर तथा सामग्री पर जल प्रोक्षण करके तीन वार आचमन कर निर्विघ्नकार्यसमाप्त्यर्थं गणेशादि देवों का ध्यान कर संकल्प करे।

संकल्पः—

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुर्नमः परमात्मने श्रीश्वेतवाराहकल्पे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गतब्रह्मावर्तैकदेशे बौद्धावतारे अमुकनाम्नि संवत्सरे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकगोत्रोत्पन्नोऽमुकनामाहमद्य भगवत्याः श्रीलक्ष्मीदेव्याः प्रसादसिद्ध्यर्थे विपुलधनप्राप्त्यर्थे च लक्ष्मीसूक्तस्य पाठमहं करिष्ये ॥

इसके पश्चात् जो विधि श्रीसूक्त में लिखी है उसी विधि के अनुसार भगवती लक्ष्मी का पूजन कर इस लक्ष्मी सूक्त का सविधि पाठ करे।

ध्यानम्—

सौवर्णे पद्म सद्माऽमलकमलकृतं युग्मशः पाणियुग्मे, बिभ्रन्ती शोभयोद्ग्राहितजलधिजलोच्छन्नगात्री विधात्री। बाहुद्वन्द्वकराभयाऽद्र हृदया भक्तप्रियोल्लासिनी, लक्ष्मीर्मे भवने वसत्वनुदिनं चन्द्राहिरण्मय्यपि।१।

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ॥ भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ १ ॥

हे कमल वासिनि ! कमल सदृश कोमल हाथों वाली !

स्वच्छ स्वच्छ सुगन्धित पुष्पों की माला को धारण करने से शोभा वाली ! हे विष्णुप्रिये ! मन की बातों को जानने वाली ! त्रिभुवन (त्रैलोक्य) को ऐश्वर्य तथा धन देने वाली हे देवि ! मेरे ऊपर प्रसन्न हो जाओ ॥ १ ॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणो धनमश्विनौ ॥ २ ॥

अग्निदेव धन दें ! वायुदेव धन दें ! सूर्यदेव धन दें ! इसी भाँति वसु, इन्द्र, बृहस्पति, वरुण एवं अश्विनी कुमार आदि समस्त देव हमारे गृह में वास करते हुए हमें धन प्रदान करें ।

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो, मह्यं ददातु सोमिनः ॥३॥

हे गरुड़ देव ! आप सोम रस पीजिये । इन्द्र देव भी सोम-रस पीवें । सोमी [सोम रस पीने वाले] कुबेर आदिक समस्त देव मेरे लिये भी सोम रस दें और सोम रस के पीने वाले सर्वदा हमारे घर में निवास करें । जिससे कि मैं भी ऐश्वर्य-शाली बन जाऊँ ।

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवंति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥४॥

जो इस श्री सूक्त का पाठ करते हैं उन भक्तों को एवं जिन्होंने पुण्य किये हैं ऐसे लोगों को केवल पाठ मात्र से क्रोध, मत्सरता, लोभ एवं अशुभ मति आदि नहीं सताते हैं ॥ ४ ॥

पद्मानने पद्म ऊरू पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥५॥

हे कमल के सदृश मुख वाली! हे कमल के समान जंघों वाली! हे कमल नयने! हे कमल में वास करने वाली! हे पद्माक्षि! तुम मेरे यहाँ सदैव वास करो, जिससे कि मैं सुख एवं ऐश्वर्य प्राप्त करूँ ॥ ५ ॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णुप्रियां सखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥६॥

मैं विष्णु-पत्नि क्षमा स्वरूपिणी, माधवो, विष्णु प्रिया, माधव प्रिया, सखी, देवी, एवं अच्युत अर्थात् सच्चिदानन्द परमेश्वर की वल्लभा को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ६ ॥

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥ ७ ॥

हम महालक्ष्मी जी की जिज्ञासा करते हैं और विष्णुपत्नी का ध्यान करते हैं अतएव श्री महालक्ष्मीजी हमें प्रेरित करें अर्थात् हमारे गृह में निरन्तर निवास करें ॥ ७ ॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रियेविश्वमनोऽनुकूलेत्वत्पादपद्मं मयिसन्निधत्स्व॥

हे कमल मुखि! हे कमल वाली! हे कमल के पत्रों वाली हे कमलों से प्रेम करने वाली, हे कमल के समान बड़ी बड़ी आँखों वाली, संसार की प्रिय, संसार के मन के अनु-

कूल चलने वाली, हे महालक्ष्मि ! तुम अपने चरण कमलों को मेरे घर में रखो ॥ ८ ॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदश्चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियः पुत्राश्च मयि श्रीर्देविदेवताः ॥९॥

आनन्द, कर्दम, श्रीद, चिक्लीत ये चार जो प्रसिद्ध पुत्र हैं जो कि इस श्रीसूक्त के ऋषि भी हैं और इस सूक्त की प्रधान देवतालक्ष्मी जी के पुत्र ही हैं मुझे श्री दें ॥ ९ ॥

ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापञ्च अपमृत्यवः ।
भय शोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥ १० ॥

हे महालक्ष्मि ! मेरी ऋण रोगादि बाधायें, दारिद्र्य, पाप, अपमृत्यु [अकाल मृत्यु] भय शोक एवं समस्त मानसिक ताप आदि सदा के लिये नष्ट हों जिससे कि मैं सर्वदा सुख भोगूँ ॥ १० ॥

श्रीर्वर्चःस्वमायुष्यमारोग्यंमाविधात्पवमानं महीयते ।
धान्यंधनंपशुं बहुपुत्रलाभंशतसंवत्सरंदीर्घमायुः।११।

इस सूक्त का पाठ करने से लक्ष्मी, तेजस्विता, आयु, आरोग्य, आदि सभी तथा पवित्रता एवं गौरव वस्तुएँ वृद्धि को प्राप्त होती हैं और धन, धान्य, पशु, बहुपुत्रलाभ, सौ वर्षों तक की आयु इसके जप मात्र से ही प्राप्त होती हैं ॥ ११ ॥

इत्याचार्यपरमानन्दशास्त्रिकृतभाषाटीकाविभूषितं श्रीलक्ष्मीसूक्तं समाप्तम् ।

संक्षिप्त-सूची

मुद्रक-जी० डी० भरतिया श्रीकृष्ण पब्लिशिंग हाऊस प्रेस मथुरा।

* श्री लक्ष्मीजी की आरती *

जय लक्ष्मी माता जय लक्ष्मी माता।
आदि शक्ति कहि तुमको, सुरगण है ध्याता
जय कमलाल वालिनि हरिप्रिये कमले।
कालीगिरा समेते जय लक्ष्मी विमले॥
इन्द्राणी रुद्राणी ब्रह्माणी तुम ही।
सकल लोक की माता पालनहेतु मही॥
जिस घर वास तुम्हारा उसका क्या कहना।
रम्य भवन हैं उनके होवे अति गहना॥
महानिशा में घर घर पूजा हो तेरी।
जय कमले हरिभामिनि अब सुध ले मेरी॥
निज पति पुत्र समेता वसियो मम घर में।
यही प्रार्थना मेरी स्वीकारो उर में॥
पूत कपूत भले हि हो लेकिन नहीं माता।
यही सोच अब मुझ पर करुणा कर माता॥
नहीं पाठ पूजा में जानूं महतारी।
केवल चरणों का ही हूँ आश्रयकारी॥
भक्ति भाव का अम्बे ज्ञान नहीं मुझको।
"धरणीधर" की अम्बे लज्जा है तुमको॥

कुछ जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ

सचित्र सुखसागर भाषा मध्यम	१०)
सचित्र सुखसागर भाषा गुटका	६)
सचित्र सुखसागर भाषा कलां	२०)
रामायण वाल्मीकि दोहा चौपाइयों में मूल	१५)
वाल्मीकि रामायण दोहा चौपाइयों में भाषा टीका सहित	२०)
बृहद् ज्योतिषसार भा०टी०	४)
मुहूर्त चिन्तामणि भा०टी०	३)
त्रिकाल ज्योतिष	६)
वशीकरण मन्त्र	॥)
शकुन मार्तण्ड भाषा टीका	॥।)
लग्नचन्द्रिका भाषा टीका	२)
पाकविज्ञान	३)
हरमोनियम तबला बाँसुरी गाइड	॥=)
सचित्र कोकशास्त्र	२॥)
चौदह विद्या चौंसठ कला	२)
अकबर बीरबल विनोद	२)
सुश्रुत संहिता भा० टी०	२०)
अमृत सागर	८)
शारंगधर संहिता भा० टी०	८)
माधव निदान भाषा टीका	५)
घूँटी प्रचार	२)
बड़ा इन्द्रजाल	२॥)
रसराज महोदधि	१०)
जर्राही प्रकाश	३॥)
पशु चिकित्सा	३॥)
घर का वैद्य	५)
नाड़ी ज्ञान तरंगणी	१॥)
विवाह पद्धति भाषा टीका	१॥)

ऊपर लिखी कीमत के अलावा पुस्तकें मँगाने का सभी खर्च जिम्मे खरीददार होगा। विशेष विवरण के लिये बड़ा सूची-पत्र मुफ्त मँगावें।

हर प्रकार की पुस्तकें मिलने का पता
गोवर्द्धन पुस्तकालय मथुरा।